वर्ष 26 वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई-पत्रिका अंक 6

वेदान्त पीयूष

जून 2026

सम्पादिका :
स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जून २०२६

वेदान्त आश्रम,

ई - 2950, सुदामा नगर

इन्दौर - 452009

Web: https://www.vmission.org.in

email : vashram.in@gmail.com

विषय सूचि

०२	प्रकाशक
०५	श्लोक
०६	सन्देश
१६	वाक्यवृत्ति
२३	गीता और मानवजीवन
३०	जीवन्मुक्त
३६	कैकेयी चरित्र
४१	कथा – शिवभक्त नन्दी
४६	आश्रम एवं मिशन गतिविधियां
६०	कार्यक्रम
६३	इन्टरनेट
६४	लिन्क

आत्मबोध - श्लोक ५८

अखण्डानन्दरूपस्य तस्यानन्दलवाश्रिताः।
ब्रह्माद्यास्तारतम्येन भवन्त्यानन्दिनोऽखिलाः॥

जिस अखण्ड आनन्दस्वरूप, ब्रह्मानन्द के लवलेश पर ही ब्रह्मा आदि देवता आश्रित है और वे सभी अपनी अपनी शक्ति के अनुपात्त में ही उस आनन्द का उपभोग कर पाते हैं॥

सन्देश

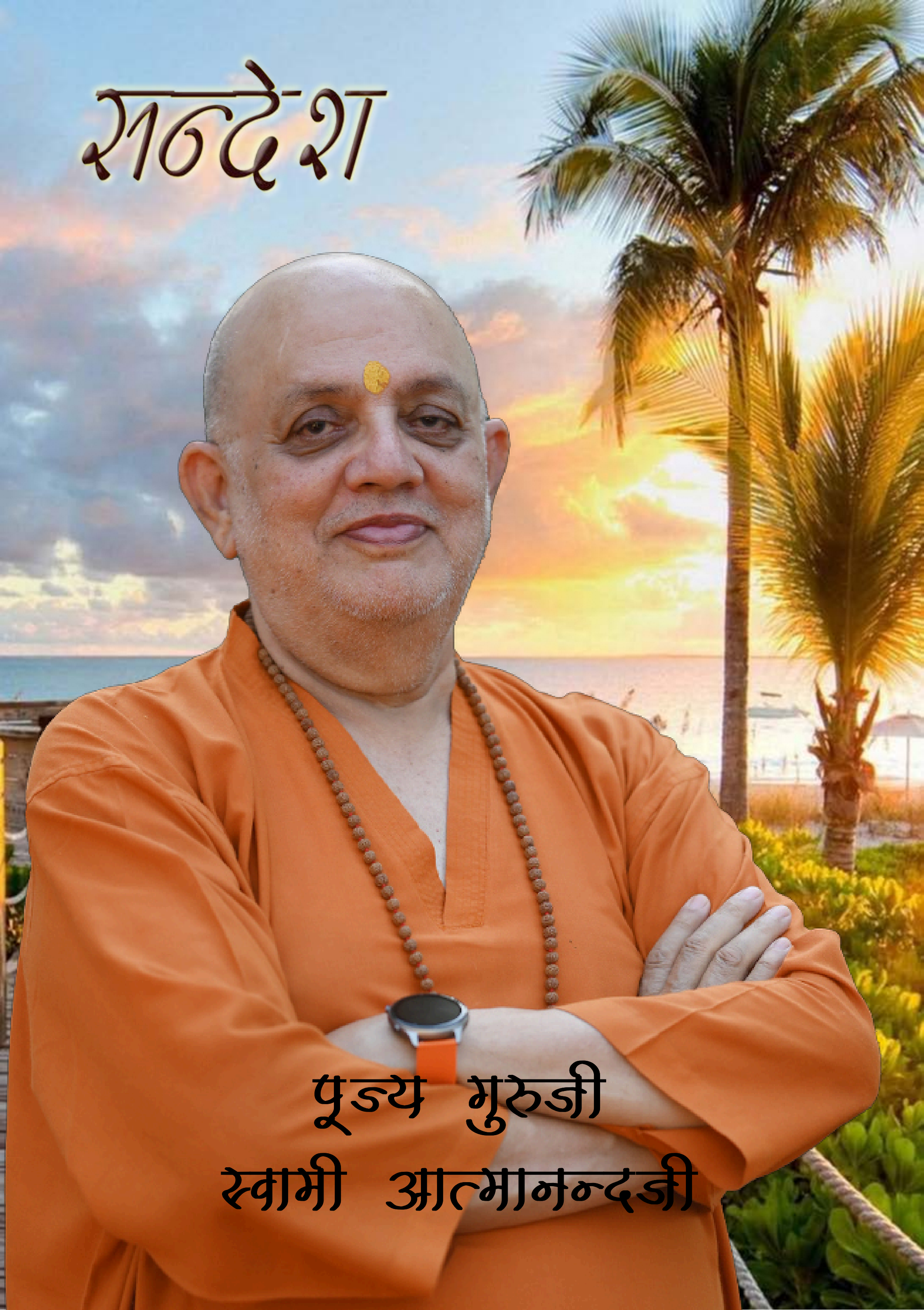

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

आरुरुक्षु

सभी योग केवल तैयारी है –

आरुरुक्षु वह है जो योगी बनने की आकांक्षा रखता है। जिसने भगवद्गीता में बताए गए योग के वास्तविक महत्व को समझ लिया है। आजके समय में 'योग' शब्द सुनते ही अधिकांश लोगों के मन में हठयोग तथा शारीरिक व्यायामों का विचार आता है। सामान्यत: योग का अर्थ केवल शारीरिक स्वास्थ्य और आसनों तक सीमित समझ लिया गया है।

हठयोग शरीर की मुद्राओं और श्वास–प्रश्वास की विधियों को संतुलित करके हमारे शरीर एवं मन में सामंजस्य स्थापित करता है। इससे मानसिक स्तर पर भी कुछ लाभ प्राप्त होते हैं। यह साधना का एक उत्तम प्रारम्भिक चरण है, किन्तु भगवद्गीता का योग इससे सर्वथा भिन्न है। कोई व्यक्ति चाहे कितना ही कुशल हठयोगी क्यों न हो, उससे यह सिद्ध नहीं होता कि वह गीता के योग के लिए भी पात्र हो गया हो। अतः 'योग' शब्द के सामान्य अर्थ से भ्रमित नहीं होना चाहिए।

शरीर, मन और बुद्धि के स्तर पर जो भी साधनाएं हमें अन्तिम आत्मजाग्रति के लिए तैयार करती हैं, उन सबको व्यापक अर्थ में 'योग' कहा जाता है। इसलिए इस विषय को खुले और पूर्वाग्रहरहित मन से समझना आवश्यक है।

गीता का योग भिन्न है

भगवद्गीता योग को ‘समत्व’ अर्थात् मन की समता के रूप में परिभाषित करती है। चाहे शरीर की अवस्था कैसी भी हो, मन में समत्व बना रहे–यही योग है।

प्राणायाम अथवा अन्य मानसिक अनुशासनों द्वारा यदि हम विचारों को कुछ समय के लिए शांत भी कर लें, तब भी वह गीता का योग नहीं है। गीता के योग का क्षेत्र कहीं अधिक गहन है। जब तक हम उसके वास्तविक स्वरूप को नहीं समझते, तब तक कोई व्यक्ति आरुरुक्षु बनने की प्रेरणा नहीं पा सकता। इसलिए पहले योग के सामान्य अर्थों को एक ओर रखकर इसे नए दृष्टिकोण से समझना होगा।

<u>गीता के योग के लिए दृष्टिकोण में परिवर्तन:</u>

हमारे मन में इच्छाएं और विचार क्यों उत्पन्न होते है? सुख मिलने पर हर्ष और दु:ख मिलने पर शोक क्यों होता है? हमारा वास्तविक बंधन क्या है और सच्ची मुक्ति क्या है? गीता के योग को समझने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है।

भगवद्गीता वेदान्त का एक प्रमुख प्रस्थान-ग्रंथ है। वेदान्त स्पष्टरूप से बताता है कि मनुष्य की मूल समस्या शारीरिक रोग नहीं, बल्कि आत्म-अज्ञान है। हम अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते और अपने विषय में अनेका मिथ्या धारणाएं बना लेते हैं। यहीं से सारी समस्या आरम्भ होती है।

संसारी की दृष्टि:

हम अपने को शरीर और मन के साथ जोड़कर एक काल्पनिक व्यक्तित्व बना लेते हैं और फिर अनन्त खोज की यात्रा पर निकल पड़ते है। जब हम स्वयं को केवल यह स्थूल शरीर मान लेते हैं, तब संसार की सारी स्थूल वस्तुएं भी हमें उतनी ही वास्तविक प्रतीत होती हैं। हम स्वयं को एक सीमित जीव और इस विशाल जगत को अपने से पृथक् मानने लगते हैं।

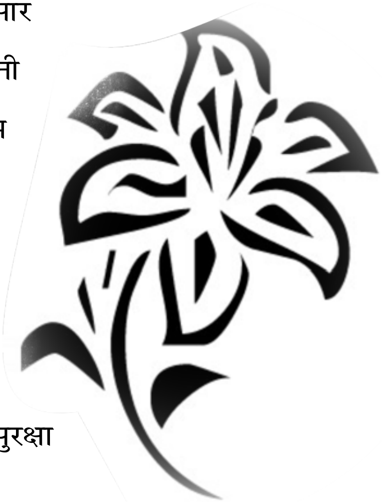

फलस्वरूप यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि हमारा सुख और सुरक्षा

संसार में ही निहित है। इन्द्रिय–सुखों की प्राप्ति, धन –सम्पत्ति का संचय और अहं की संतुष्टि ही जीवन का उद्देश्य बन जाता है। यह सब हमें केवल क्षणिक संतोष देता है, फिर भी हम निरन्तर उसीके पीछे भागते रहते हैं। यही संसारी की सामान्य जीवन–दृष्टि है।

वेदान्त का ज्ञान

गीता का योग इन सभी मान्यताओं का खण्डन करता है। यह जीवन दर्शन में एक मौलिक परिवर्तन है। वेदान्त हमें बताता है कि हम वास्तव में कोई सीमित जीव नहीं, बल्कि एकमात्र अद्वैत, अनन्त सत्य हैं। यह निरन्तर परिवर्तित होनेवाला जगत परम सत्य नहीं है; यह स्वप्न के समान प्रतीत होनेवाला अनुभव है।

यदि यह समझ दृढ़ हो जाए, तो संसार से सुख प्राप्त करने की धारणा स्वतः ही निरर्थक लगने लगती है। परिवर्तनशील वस्तुओं में स्थायी सुरक्षा खोजने का प्रयास भी व्यर्थ प्रतीत होता है।

सच्ची बुद्धिमत्ता अपने वास्तविक स्वरूप को जानने में है। इन सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीना ही योगी का लक्ष्य है।

ध्यान रहे, योगी बनने के लिए अभी आत्म–साक्षात्कार आवश्यक नहीं है; आवश्यक है इन सत्यों में दृढ़ श्रद्धा और विश्वास की।

<u>पहले श्रद्धा और विश्वास</u>

गीता कहती है– 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्'

जो इन सत्यों में श्रद्धा रखता है, वही एक दिन ज्ञान प्राप्त करता है। हमारा सम्पूर्ण जीवन विपरीत धारणाओंमें बीता है। अब हम समझते हैं कि उन मिथ्या विश्वासों के आधार पर जीवन केवल एक अंधी दौड़ बन जाता है। एक दिन मृत्यु सब कुछ छीन लेगी। यदि मृत्यु के

बाद धन-सम्पत्ति का कोई उपयोग नहीं, तो जीवनभर उसे ही सुख और सुरक्षा का आधार मानना उचित नहीं है। गीता जीवन और मृत्यु दोनों पर गहन चिन्तन के लिए प्रेरणा देती है।

शाश्वत सत्यों पर आधारित जीवन

गीता का योग हमें इस नवीन जीवन-दृष्टि को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

गहरा विश्वास रखिए कि यह संसार निरन्तर परिवर्तनशील, स्वप्नवत् है और ईश्वर की मायाशक्ति का प्रकटरूप है। यह भी समझें कि अहंकार हमारी वास्तवकि पहचान नहीं, बल्कि काल्पनिक व्यक्तितत्व है।

यदि यह सत्य है, तो अनुकूल परिस्थितियों में अत्यधिक हर्ष और प्रतिकूल परिस्थितियों में अत्यधिक शोक का कोई कारण नहीं रह जाता।

हम संसार और उसकी घटनाओं को एक नए दृष्टिकोण से देखने लगते हैं। जो कुछ घट रहा है, उसे ईश्वर की इच्छा समझकर स्वीकार करना सीखते हैं।

उस बदली हुई दृष्टि से जो समत्व उत्पन्न होता है, वही गीता का वास्तविक योग है। जीवन के प्रत्येक क्षण में हमें भीतर से अन्तर्मुखी और यथार्थवादी बने रहना है। धीरे–धीरे हम इस स्वप्नवत् संसार में रहते हुए सत्य की खोज करना सीखते हैं। यही गीता का योग है।

आरुरुक्षु होने का अर्थ

आरुरुक्षु वह है जिसके भीतर इस मौलिक परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा हो। वह समझता है कि वेदान्त का यह जीवन–दर्शन ही सार्थक है।

योगी बनने के लिए अभी प्रत्यक्ष आत्मज्ञान आवश्यक नहीं है, बल्कि वेदान्त के सिद्धान्तों में गहन, तर्कसंगत और ईमानदार श्रद्धा आवश्यक है। ऐसी श्रद्धा का परिणाम है– जीवन की परिस्थितियों में संतुलन तथा आत्मसत्य को जानने की विनम्र जिज्ञासा। अपने वर्तमान आत्मबोध की ओर मुड़ना, उसका निरीक्षण करना और फिर विवेकपूर्वक उसकी जांच करना–यही ज्ञान की दिशा है।

आरुरुक्षु वह है जो ऐसे अंतर्मुखी और संतुलित योगी बनने की तीव्र इच्छा रखता है।

<u>तीव्र इच्छा ही सफलता का मार्ग है</u>

किसी भी महान लक्ष्य की प्राप्ति में सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है–उसके प्रति तीव्र इच्छा। अतः योगी बनने की यह आकांक्षा इतनी प्रबल हो कि मन की अन्य सभी छोटी इच्छाएं उसके सामने गौण हो जाएं। तभी हम वास्तविक आत्मजागरण के लिए तैयार होंगे। आरुरुक्षु बनना कहना आसान है, परन्तु करना कठिन। हमें अपनी गहरी जड़ जमाई हुई धारणाओं और संस्कारों का सामना करना पड़ता है।

यह एक मौलिक परिर्तवन है–मानो नदी की धारा को विपरीत दिशा में मोड़ देना। लक्ष्य महान है, इसलिए उसे पाने की इच्छा भी उतनी ही महान और प्रबल होनी चाहिए। उसका फल केवल अनन्त सत्य की प्राप्ति ही नहीं, बल्कि इस संसार में भी एक अत्यन्त विवेकपूर्ण, संतुलित और बुद्धिमान जीवन है।

ॐ तत्सत्

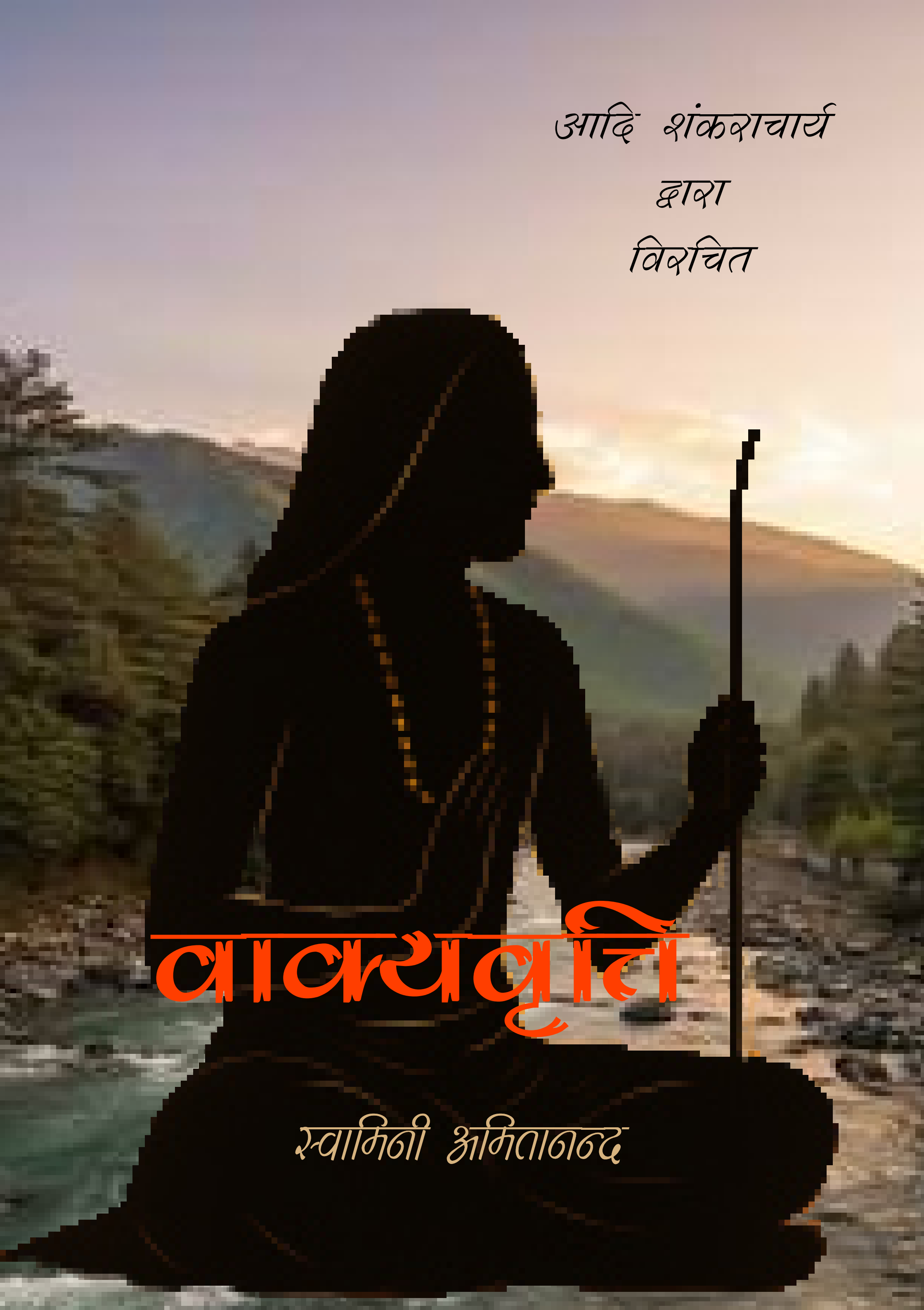

आदि शंकराचार्य
द्वारा
विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

श्लोक – ३५

जीवात्मना प्रवेशश्च नियन्तृत्वे च तान् प्रति।
श्रूयते यस्य वेदेषु तद्ब्रह्मेत्यवधारय॥

श्रुति में जिस तत्त्व की चर्चा करते हुए बताया गया है कि जिसने सब में जीवरूप से प्रवेश किया है तथा जो जीव को नियंत्रित भी कर रहा है, वह ही ब्रह्म है – ऐसा निश्चय करो।

वाक्यवृत्ति
श्लोक संख्या : ३५

आचार्य यहां ब्रह्म का स्वरूप विविध श्रुतियों के प्रमाण के आधार से दर्शा रहे हैं। पूर्व श्लोक में ब्रह्म को सम्पूर्ण सृष्टि का कारण दिखाया गया। यह दिखाने के माध्यम से बताया कि सृष्टि कार्यरूप और ब्रह्म उसका कारण है। कारण सत्य और कार्य मिथ्या है। सृष्टि कार्य है, नामरूपात्मक, जड़रूपा है। जड़ जगत् स्वतंत्ररूप से कोई कार्य नहीं कर सकता।

इसी जड़ सृष्टिरूपा आकाशादि पांच महाभूतों से हमारा शरीर, इन्द्रिय, प्राण, मन आदिरूप कार्यकरण संघात

बना है और जड़ होते हुए भी उसके द्वारा विविध कार्य, व्यवहारादि होता दिखाई देता है। अतः यह प्रश्न होता है कि जड़ होते हुए भी कैसे कार्य करने में सक्षम हो सकता है? इसके लिए किसी चेतनतत्त्व की आवश्यकता होती है।

उस बात को आचार्य यहां पुनः तैत्तिरीय उपनिषद् के प्रमाण से बता रहे हैं। जिसमें बताया कि 'तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत' अर्थात् उन परमात्मा में सबका सृजन किया और वे ही उसमें प्रवेश कर गए। यह श्लोक उसीका अनुवाद है कि 'जीवात्मना प्रवेशश्च' अर्थात् परमात्मा ने सृष्टि की रचना करी और उसमें जीवरूप से प्रवेश किया। इस श्रुति को प्रवेश श्रुति कहा जाता है। प्रवेशश्रुति का उद्देश्य यह नहीं है कि ब्रह्म कहीं और था और फिर वह कहीं बाहर से भीतर प्रवेश करता हैं। किन्तु ब्रह्म ही अपनी मायाशक्ति से कार्यरूप

जगत की तरह अभिव्यक्त हैं। अत: सर्वत्र व्याप्त हैं।

सर्वत्र व्याप्त होते हुए भी उन सत्, चित् आनन्द स्वरूप ब्रह्म की सर्वत्र चेतनस्वरूपता की उपलब्धि नहीं होती है। उनकी शरीरादि में चेतनारूप से उपलब्धि को ही प्रवेश कहा जाता है। जिस प्रकार आकाश सर्वव्यापी होते हुए भी कुम्हार द्वारा घड़े का निर्माण करने पर आकाश उसके अन्दर समाया हुआ सा प्रतीत होता है। घड़ा बनता है तो सर्वव्यापी आकाश उसमें समाया हुआ सा प्रतीत होता है। उसे हम घटाकाश संज्ञा देते है। उसी प्रकार परमात्मा शरीर में जीवरूप से प्रवेश करते हैं। अर्थात् उस जड़ शरीर में भी चेतनता/जीवन्तता दिखने लगती है। इस विशिष्ट रूप से उपलब्ध चेतन को ही जीव कहा जाता है। जिस प्रकार आकाश विविध घटाकाश के रूप में भासित होता है, सबके कार्य व उपयोगिता भी उपाधि के भेद से भिन्न भिन्न है। इससे आकाश अनेक नहीं हो जाता है किन्तु

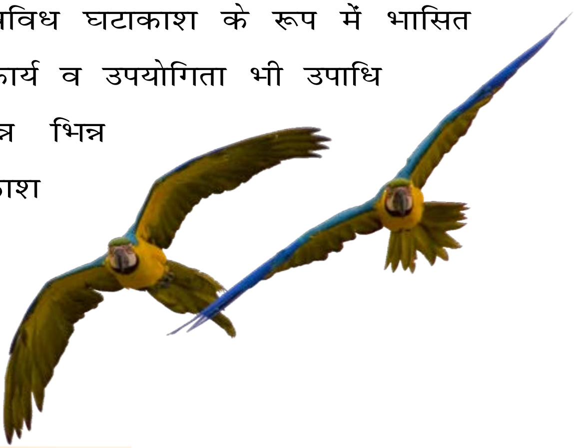

एक ही होता है। उसी प्रकार से एक ही परमात्मा विविध जीवों के रूप में अभिव्यक्त हो रहे हैं। भेद तो मात्र नाम रूपात्मक उपाधि की विशेषताओं के कारण है। यह सब उपाधि की विलक्षणता और विशेषता की वजह से विविध सामर्थ्यो से युक्त है। उसे मनुष्य, देव- गन्धर्व, पशु-पक्षी आदि विविध नाम देते हैं।

यह सब विविध योनियां अपने कर्म के अनुरूप पाप-पुण्य का भोग करती हैं। मनुष्य कर्म करनेवाला कर्ता तथा अपने पाप-पुण्यों को भोगनेवाला भोक्ता बनता हैं। विविध योनियां भी अपने-अपने कर्मका फल भुगतती हैं। कर्मानुरूप उनके जन्म-मृत्यु तथा मध्य में अनेकों विकार होते हैं, जीवन में विविध परिस्थितियां प्राप्त करके सुख-दुःख आदि का भोग करते हैं। इन कर्मो के फल को प्रदान करनेवाला कर्मफलदाता कोई है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण सृष्टि जैसे सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु आदि अपने अपने कार्यो में रत दिखाई देते हैं। मानों सृष्टि के संचालन में अपना योगदान दे रहे हैं।

यहां इस विषय में आचार्य तैत्तिरीय उपनिषद् की ही श्रुति का सन्दर्भ दे रहे हैं, जहां बताया गया कि 'भीषास्माद्वात: पवते....' अर्थात् उनके भय से वायु बह रही है, सूर्य उदित हो रहा है, अग्नि तप रही है, मृत्युदेवता भी सतत विनाश के कार्य में प्रवृत्त हैं। इसके पीछे मानों कोई समर्थ नियन्ता हैं, जिसके नियंत्रण में यह सब जगत अपना अपना कार्य कर रहा है तथा मनुष्यादि कर्म करता है तथा उनके द्वारा प्रदत्त कर्म का फल भुगतता हैं।

इस प्रकार एक सर्व समर्थ, नियन्ता हैं और अन्य सब उनके द्वारा नियंत्रित हैं। मूलरूप से एक ही चेतना सबमें अभिव्यक्त हैं, उपाधि की विशेषता की वजह से ही यहां नियन्ता–नियंत्रित का भेद देखा जाता हैं।

परमात्मा का जीवात्मारूपसे प्रवेश होना और उसका नियंत्रित होना यह बताने का उद्देश्य मात्र उपाधि के धरातल पर की ही भिन्नता को दर्शाना है, मूलरूप से एक ही चेतनतत्त्व सबमें व्याप्त होने से सब ब्रह्मस्वरूप ही हैं।

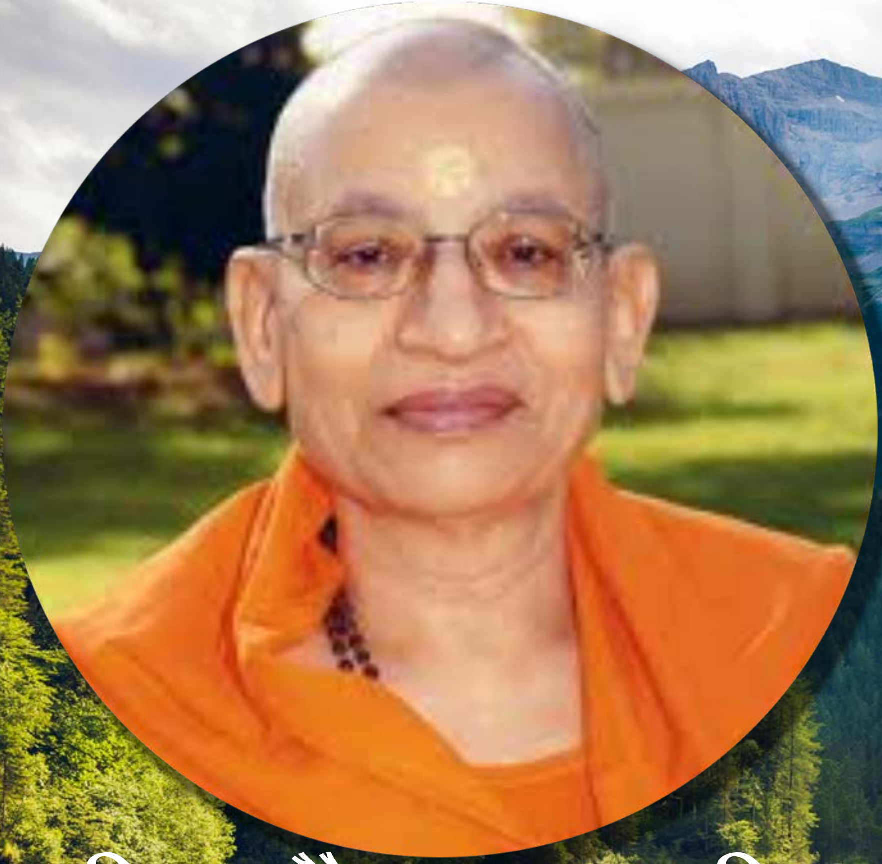

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

- ३८ -

कसौटी

गीता और मानवजीवन

कसौटी

कठोपनिषद् वर्णन करता है कि मृत्युदेव यमराज से वरदान मांगते हुए बालक नचिकेता पूछता है कि, 'कोई कहता है कि मृत्यु के बाद आत्मा नामक तत्त्व शेष रहता है और कोई कहता है कि देह से भिन्न आत्मा है ही नहीं। आप हमें इसका रहस्य समझाएं।' यमराज आश्चर्यचकित रह गएं। इतना छोटा बालक आत्मविद्या विषयक प्रश्न करता है, आत्मविषयक ज्ञान प्राप्त करना चाहता है! ऐसा ज्ञान योग्य पात्रता के बगैर दिया नहीं जा सकता, इसलिए यमराज पहले की परीक्षा लेते हैं। नचिकेता को अनेकानेक प्रलोभन देते हुए कहते हैं, 'नचिकेता, तुम इस बात को छोड दो।

यह तुम्हारे लिए नहीं है। देवताओं को भी इस विषय में संशय रहा है, यह ज्ञान उनके लिए भी दुर्लभ है। इसके बदले तुम पुत्र, पौत्र, राज्य, वाहन, सुख-सुविधा जो कुछ चाहिए, वह सब मांग लो।'

नचिकेता ने कहा, 'जो ज्ञान देवताओं को भी दुर्लभ है, वह ज्ञान तो हमें विशेषरूप से चाहिए। हमें सुख-सुविधा नहीं चाहिए, उसका हम क्या करें?' यमराज ने कहा, तुम्हें इस पृथ्वी के राज्य से संतोष नहीं हो रहा है, तो हम तुम्हें स्वर्ग का भोग देते हैं।' नचिकेता ने जवाब में कहा, भगवान्! आप जो वस्तुएं हमें देने के लिए तैयार है- राज्य, सुख, उपभोग, वाहन, अप्सराएं, नृत्य-गीत इत्यादि वह क्या सदैव टिकी रहेगी? वह कल रहे या न रहे, उसका कोई भरोसा है? आप हमें

दीर्घ आयुष्य दे सकते हैं, किन्तु कितना लम्बा? आपकी आयु से तो लम्बा नहीं दे सकते है न!' यमराज का भी एक पद है, अधिकार है, उसकी भी मर्यादा है। इसलिए नचिकेता कहता है कि, 'आप कितनी भी दीर्घ आयु दें, किन्तु वह शाश्वत की अपेक्षा तो अल्प ही रहेगी। इसलिए हमें ऐसी वस्तु दीजिएं जो नित्य और स्थायी हो।'

यमराज ने देखा कि यह बालक सत्य को ही श्रद्धापूर्वक पकडा हुआ है और इसलिए वह ज्ञान का अधिकारी है तब उन्होंने आत्मज्ञान का उपदेश दिया।

नचिकेता यदि धन –सम्पत्ति, राज्य–वैभव, पुत्र–पौत्रादि से प्रलोभित हो गया होता तो आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता था। अभिप्राय यह है कि उत्कृष्ट वस्तु की

प्राप्ति के लिए निकृष्ट वस्तु को त्यागना पडता है। कोई व्यक्ति व्रत लेता है तो उनकी कसौटी होगी ही। इसके बगैर व्रत का अर्थ ही नहीं रहता है। इसलिए जीवन में उच्च ध्येय सिद्ध करना हो तो कसौटी होगी ही, विघ्न तो आएंगे ही। इन विघ्नों का सामना करने के लिए अपने अन्दर श्रद्धा होनी चाहिए, आत्मबल होना चाहिए।

शिव-महिम्न स्तोत्र में एक कथा का उल्लेख है। विष्णु भगवान शिवजी के भक्त हैं। वे प्रतिदिन काशी विश्वनाथ की बहुत भक्तिभाव से पूजा, सहस्रनाम से अर्चना करते और भगवान के श्री चरणों में एक सहस्र कमल समर्पित करतें। एक बार शंकर भगवान ने उनकी भक्ति की कसैाटी करने का निर्णय किया। एक दिन नित्य

नियमानुसार सहस्रनाम–अर्चना चल रही थी। एक हजार में से 999 कमल श्री विष्णुजी ने नामोच्चारण के साथ समर्पित किएं और एक कमल की कमी हो गई। अब अन्तिम नाम के लिए कोई कमल शेष बचा नहीं। यदि हम पूजा कर रहे होते और कमल की कमी पड़ती तो अक्षत अर्पित कर देते या उठकर बाहर से ले आते, किन्तु पूजा पूरी किए बगैर आसन से उठ भी नहीं सकते। संकल्प करने के उपरान्त काम सम्पन्न न होने तब आसन छोड़ा नहीं जा सकता। अब पूजा भी कैसे करें? एक कमल कहां से लाएं? विष्णु भगवान को याद आया कि लोग हमें पुण्डरीकाक्ष – कमलनयन कहते हैं अर्थात् अपने नेत्रों की कमल के साथ तुलना करते है। इसलिए उन्होंने अपनी एक आंख नीकाल कर भगवान के चरणों में समर्पित कर दी।

up

कितनी तीव्र भक्ति और कितनी महान् श्रद्धा! ऐसे अनेकानेक उदाहरण अपने यहां है। हम तो उसके एक अंश भी नहीं है। आपके पास इतनी शक्ति नहीं है, सामर्थ्य नहीं है, श्रद्धा नहीं है या भक्तिभाव भी नहीं है कि अपनी आंख अर्पण कर दें और हमसे इतनी अपेक्षा भी नहीं है। किन्तु हमें उत्कृष्ट ध्येय पाने की इच्छा हो तो अनेकों विघ्न आएंगे ही, कसौटी होगी ही, उसका सामना करने का दृढ़ निश्चय हममें होना चाहिए। सत्य की ही जय होती है, ऐसी श्रद्धा होनी चाहिए और न हो तो भगवान से उसके लिए हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए।

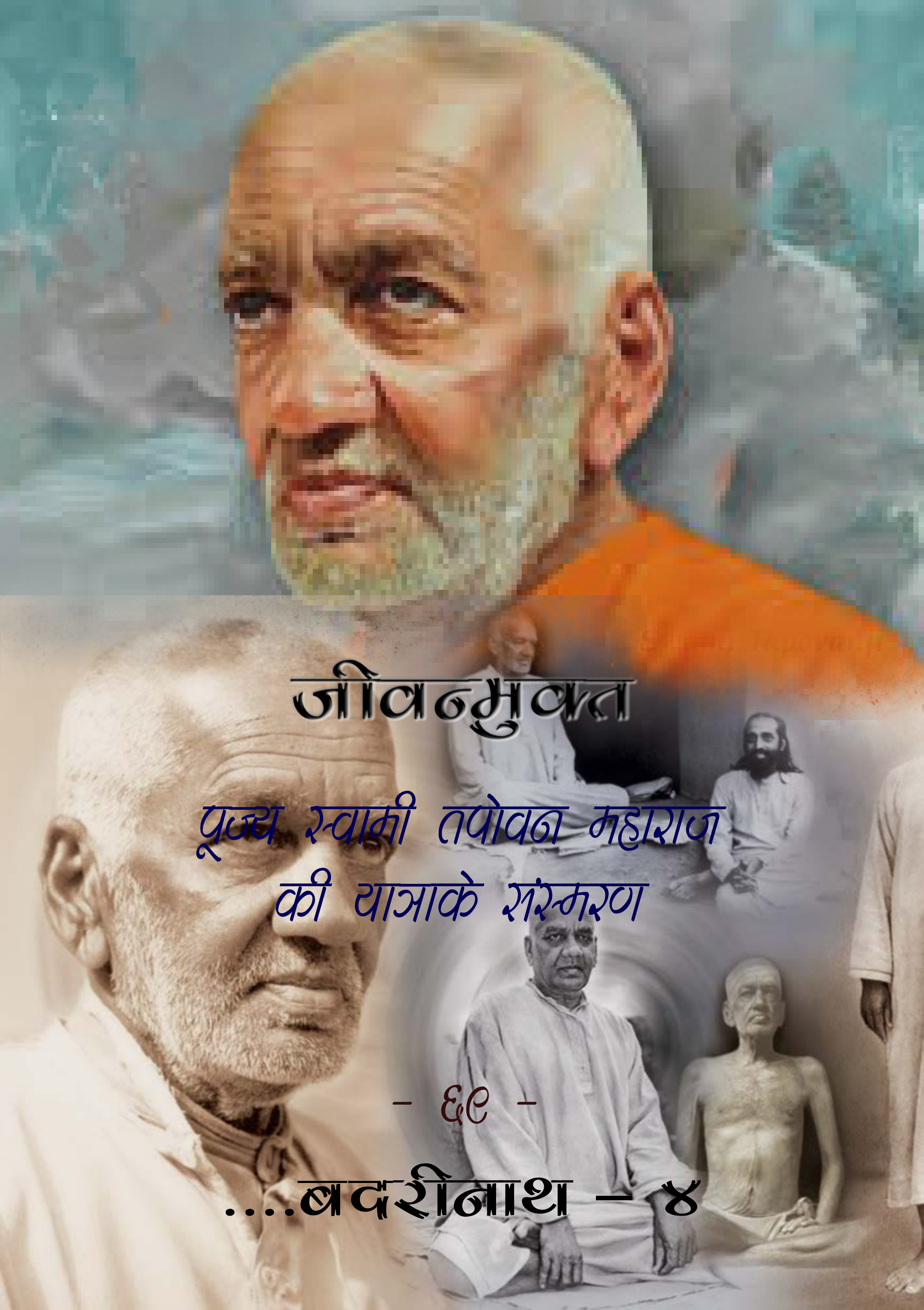
जीवन्मुक्त
पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण
- ६८ -
...बदरीनाथ - ४

जीवन्मुक्त बद्रीनाथ – ०४

आइए! अब हम इसका सूक्ष्म निरीक्षण करें कि हिम धवल शिखर प्रदेशों के साथ चारों ओर चमक दमक फैलाते हुए प्रकाशमान ये गम्भीर शिलोच्चय इस निर्जन, निर्जीव एवं निगूढ़ प्रदेशों में स्थित होकर क्या करते थे? अनवरत ईश्वर–संगीत का गान करते हैं। ईश्वरीय महिमा के बारे में पुण्यगीत मधुररूप में तथा उच्चस्वर से गाने के सिवा मैं इनका और कोई काम नहीं देखता। कोई इस प्रकार आक्षेप न करे कि पाषाण, मिट्टी और हिम का समूह यह अचेतन पर्वत किस प्रकार चेतन मनुष्यों के समान गायन कर सकता है? किन्तु इनका गान सशब्द नहीं है। यह तो निःशब्द है। इनका गंभीर भाव, इनकी अभेद्य, अचंचल स्थिति

तथा पशु पक्षियों को भी प्रमोदित करनेवाली इनकी दिव्य सुषमा महिमा ही इनका निःशब्द संगीत है। ये भले ही वाणी के माध्यम से न गायें, किन्तु इनका गान वाणी के माध्यम से किये गये परमात्म संकीर्तन की अपेक्षा कहीं अधिक मृदु, मधुर, तथा गम्भीर होता है। इन्द्रियों के माध्यम के बिना ही ये सदा स्वमहिमा से ईश्वर महिमा की उद्घोषणा करते रहते हैं। लो, नितांत प्रवाहमान यह 'अलकनंदा' नामक पुण्यनदी 'वसुधारा' नामक यह जल प्रपात क्या कह रहे हैं? ये उच्च स्वर में उस परमात्मा की विभूति महिमा का समधुर रूप से गान ही तो कर रहे है–

यस्मात् स्यन्दन्ते सिन्ध
ाव: सर्वरूपा:।

जिस परमात्मा की शक्ति से छोटी बड़ी सब सरिताएँ सदा बहती रहती हैं, उस सर्वशक्त, सृष्टा

up

परमात्मा का वे कृतज्ञता तथा आदर के साथ सतत संकीर्तन कर रही हैं।

उधर देखिए और सुनिए! आकाश में विचित्र मैनाओं का समूह सुस्वर से उस जगत पिता परमात्मा की महिमा को गाते हुए स्वच्छ्न्द उड़ता जा रहा है। और इधर नाना वर्णों में सर्वत्र विकसित ये कमनीय पुष्प इस दिव्य भूमि में क्या कर रहे हैं? ये भी उच्च स्वर में उस परमेश्वर की अतिशय महिमा का गुणगान कर रहे हैं। इस प्रकार इस पुण्यभूमि में सभी चराचर पदार्थ सर्वेश्वर के ऐश्वर्य गान में सदा प्रवृत्त दिखायी देते हैं।

रोज की तरह प्रभात में मै वसुधारा में स्नान कर उधर हरित तृणों एवं कमनीय कुसुमों से आच्छन्न उस मंजुल मैदान में धूप में जा बैठा। अहो! चारों ओर से सुनायी पड़ने वाले उस ईश्वरीय संगीत को

मैं बड़े अभिनिवेश के साथ सुनने लगा। उस मनोहर संगीत का मैं बड़े प्रेम से आनन्द लेने लगा। सुमधुर संगीत श्रवण के द्वारा गीत से सम्बन्धित परमात्म-महिमा के माध्यम से परमात्मा के परमानन्दघन स्वरूप का ध्यान करते करते मेरा मन तरंगित हो उठा। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा मानो, चंदन लेपन, शुभ्र वस्त्रधारण आदि क्रियाओं के बिना ही मेरा शरीर दर्शनीय एवं तेजोमय बन गया। मिष्ठान्नों के बिना ही मेरा पेट भर गया। मुझे संसारभर के सभी भोग्य पदार्थो मिल गये। कोई अभाव न रहा। मैं आनन्द से इतना मदोन्मत्त हो गया कि मेरा 'अहं' मिट गया। वसुधारा, हिमधारा तथा जगत् के समस्त पदार्थ अस्त हो गये। मेरे लिए सभी द्वन्द्वभाव लुप्त हो गये। मैं अद्वैतानंद रूप हो गया। अहा! 'हा! आनन्द! आनंद! आनंदरूप अद्वैत ही सत्य है। जब मन के विस्फुरण अस्त हो जाते है, तब जो वस्तु शेष रहती है, वह आनंदघन तथा सत्य होती है। हे हिमालय! तेरी

महिमा का, तेरी आध्यात्मिक महिमा का मैं कोई अन्त नहीं देखता। धन्य, धन्य तू विजयी रह! हे देवतात्मा हिमालय! तू ऐसे अनेक दिव्य पदार्थो को, जीवन में कभी न भूलने वाले पदार्थो को, मुझे प्रदान कर। तेरे ऐसे ईश्वरीय गीतों को हिमालयनिवासी मैं अनुदिन सुनता ही रहता हूँ, तो भी आज के से दिन मेरे जीवन में विरले ही आये है, जब कि अत्यधिक अनुराग के साथ तेरा मधुर गीत सुन कर आत्मविस्मृत होकर मुग्ध हो जाता हूँ।

श्री रामचरितमानस पर आधारित

— ०७ —

कैकेयी चरित्र

कैकेयी चरित्र – ०७

कैकेयी द्वारा मांगे गए वरदानों का सर्वाधिक प्रभाव यद्यपि राघवेन्द्र पर ही पड़ता था, पर कैकेयी की अन्तश्चेतना में यह धारणा विद्यमान थी कि राम विद्रोही पुत्र के समान आचरण कभी नहीं कर सकते हैं। साधारणतया कैकेयी के मन में सबसे अधिक आशंका इसी बात की होनी चाहिए थी कि पता नहीं राम इन आज्ञाओं को स्वीकार करेंगे या नहीं। किन्तु इस प्रकार की आशंका का कोई चिह्न कैकेयी के व्यवहार में प्रकट नहीं होता। अविश्वास के क्षणों में भी विश्वास का ऐसा दृष्टान्त विश्व के इतिहास में दुर्लभ है। यह भी मानना ही होगा कि कैकेयी ने अपने भूतपूर्व लाड़ले पुत्र को समझने में भूल नहीं की थी। फिर

भी आगे चलकर वे रामभद्र के सौजन्य को देखकर चकित सी प्रतीत होती हैं। उनके प्रस्तावों को सुनकर राघव में जिस आनन्द की अभिव्यक्ति हुई और जिन शब्दों में उन्होंने कैकेयी अम्बा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की वह उनके लिए कल्पनातीत थी।

रामभद्र का कैकेयी अम्बा के प्रति अनुराग कभी न्यून नहीं हुआ। उनके वरदानों द्वारा महान् लोकमंगल की सृष्टि की गई, ऐसी उनकी धारणा थी। उनकी यह मान्यता थी कि कैकेयी अम्बा ने कलंक लेकर इन वरदानों को मांगकर यदि पृष्ठभूमि न बनाई होती तो उनके दो महान् उद्देश्य अधूरे रह जाते। एक भरत–चरित्र का प्राकट्य तथा दूसरा रावण का वध। कैकेयी अम्बा की की जानेवाली निन्दा की वे सर्वदा आलोचना करते रहें। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि मेरी माता को दोष देनेवाले जड़ हैं और ऐसे लोगों ने स्वप्न में भी साधु–सभा की सेवा नहीं की होगी।

किन्तु प्रभु के इस दृष्टिकोण को तथ्यपरक मानकर स्वीकार करना उपयुक्त नहीं होगा। कई बार मानस के व्याख्याता इसीको आधार बनाकर कैकेयी अम्बा को सर्वगुण विभूषिता सिद्ध करने का प्रयास करते हैं जब कि वे यथार्थ से कोसों दूर हैं। वस्तुतः यह तो रामभद्र के शील सौजन्य का प्रमाण है कि वे पीड़ा पहुंचाने वाली कैकेयी को भी किस तरह निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। वे रामभद्र की तुलना में कैकेयी को कुमति की उपाधि प्रदान करते हैं।

राघवेन्द्र के साथ लक्ष्मण और सीता के वनगमन से कैकेयी को और भी संतोष हुआ। लक्ष्मण के स्वभाव से वे भलीभांति परिचित थी। सीता के आग्रह को देखकर अवश्य सारा राजपरिवार व्याकुल हो उठा था। पर वहां भी कैकेयी की निष्ठुरता साकार हो उठी। उन्हें यह आग्रह, मनुहार असह्य प्रतीत हो रहा था। वस्तुतः

जिस सरलता से उनकी योजना साकार हुई थी, उससे उनके मन में एक अप्रत्याशित आशंका समा गई थी कि कहीं यह सब योजनाबद्ध रीति से षड्यंत्र का ही एक भाग न हो। उनके मन में यह संशय मुखर हो रहा था कि कहीं राम ने चतुर अभिनेता की भांति स्वीकृति का नाटक ही तो नहीं किया है। एक ओर वे स्वयं त्याग का नाटक रचकर सबकी सहानुभूति एकत्र कर रहे हैं और दूसरी ओर उन्हें रोकने का आग्रह प्ररम्भ कर दिया गया है। सीता, लक्ष्मण के बहाने या लोगों के आग्रह की आड़ लेकर यह रुकने की पृष्ठभूमि ही तो नहीं बनाई जा रही है।

कथा प्रसंग

शिवभक्त — नन्दी

कथा प्रसंग – शिवभक्त – नन्दी

पूर्वकाल में शिलाद नामक एक धर्मात्मा मुनि ने अपने पितरों के आदेश से मृत्युहीन एवं अयोनिज पुत्र की कामना से भगवान शिव की कठोर तपस्या की। महादेव उनके तप से प्रसन्न होकर साक्षात प्रकट हुएं और उसे वर मांगने को कहा।

शिलाद बोलें–'भगवन्! यदि आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो यह मुझे अयोनिज, मृत्युहीन पुत्रप्राप्ति का वरदान दीजिएं।' महादेव ने कहा, ' हे विप्र! यद्यपि मैं जगत का पिता हूं, तो भी मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न तुम्हें वर देता हूं कि मैं ही तुम्हारे अयोनिज पुत्र के रूप में अवतार लूंगा और उस अवतार में मेरा नाम नंदी होगा।' ऐसा कहकर भगवान शिव अन्तर्धान हो गएं। कुछ समय

पश्चात् शिलाद यज्ञ करने के लिए यज्ञक्षेत्र जोत रहे थे कि उसी समय उनके स्वेदबिंदु से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह बालक सूर्य के समान प्रभावशाली, त्रिनेत्र, जटामुकुटधारी, त्रिशूल आदि से युक्त तथा चतुर्भुज रुद्र के रूप में मुनि दिखाई दिया। उसे देखते ही शिलाद अत्यन्त प्रसन्न हुए। वे बालक को अपनी कुटिया में ले गएं। वहां जाने पर बालक ने एक साधारण मनुष का रूप धारण कर लिया। मुनि बडे ही प्यार से उसका पालन–पोषण करने लगें। उनका जातकर्म संस्कार करवाकर उसका नाम नंदी रखा।

बालक पांच वर्ष की आयु में ही सभी वेदों–शास्त्रों का ज्ञाता हो गया। सातवां वर्ष पूरा हुआ तो वहां दो मुनि उसे मिलने आएं। उनमें से एक का नाम मित्र था और दूसरे का वरुण। उन्होंने मुनि शिलाद को बताया कि अपके पुत्र की आयु मात्र एक वर्ष शेष है। यह जानकर शिलाद चिंतित हो उठें। नंदी ने उन्हें धैर्य बंधाया और कहा कि यमराज मेरा कुछ नहीं

up

बिगाड़ पाएंगें। महादेव काल के भी काल हैं। मैं उनकी आराधना करुंगा और उनके प्रभाव से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर पाउंगा।’ ऐसा कहकर नंदी वन में जाकर महादेव की आराधना व तपस्या करने लगें। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महादेव व माता पार्वती प्रकट् हुएं। उन्होंने नंदी से कहा, ‘हे शिलादनंदन! तुमने बड़ा ही उत्तम तप किया है। मैं तुम्हारी तपस्या से परं संतुष्ट हूं। अत: अपना अभीष्ट वर मांग लो।

नंदी भावविभोर होकर महादेव के चरणों में लेट गएं। तब शिव ने उसे उठाया और कहा, ‘ वत्स! उन दोनों विप्रों को मैने ही भेजा था। तुम्हें भला मृत्यु का भय कहां! तुम तो मेरे ही समान हो। तुम अजर-अमर, अक्षय होकर मेरे गणनायक बनोंगे। तुममें मेरे ही समान बल होगा। जन्मादि विकार तुम्हें स्पर्श भी नहीं करेंगे।

ऐसा कहकर महादेव ने अपने गले की माला उतारकर नंदी के गले में डाल दी। माल धारण करते ही नंदी त्रिनेत्र, दशभूजाओंवाले हो गएं। फिर भगवान ने अपने गणाध्यक्ष के पद पर उनका अभिषेक किया। वह शिवगणों में सर्वश्रेष्ठ हो गएं।

up

The Devil whispered in my ear,
"You're not strong enough to withstand the storm."
Today I whispered in the Devil's ear,
"I am the storm."

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

Activities

Geeta Ch 6 with Shanker Bhashya begins in Adhik Maas

Adhik Maas Anushthan

Activities

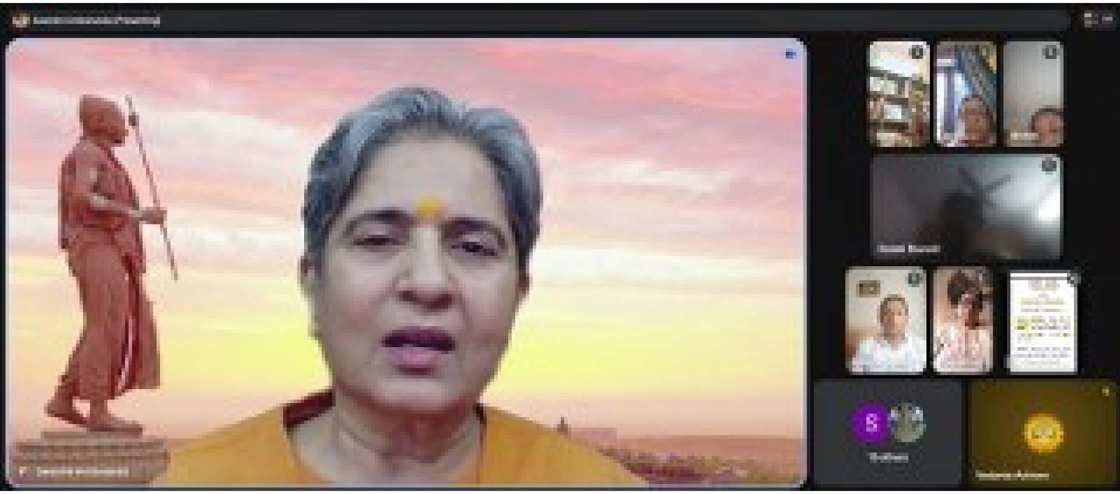

Weekly Online Classes

Activities

Activities

Dr. Hemant Kaushik visits Ashram

Activities

Activities

Aashirwad to Aditya Misra

up

Activities

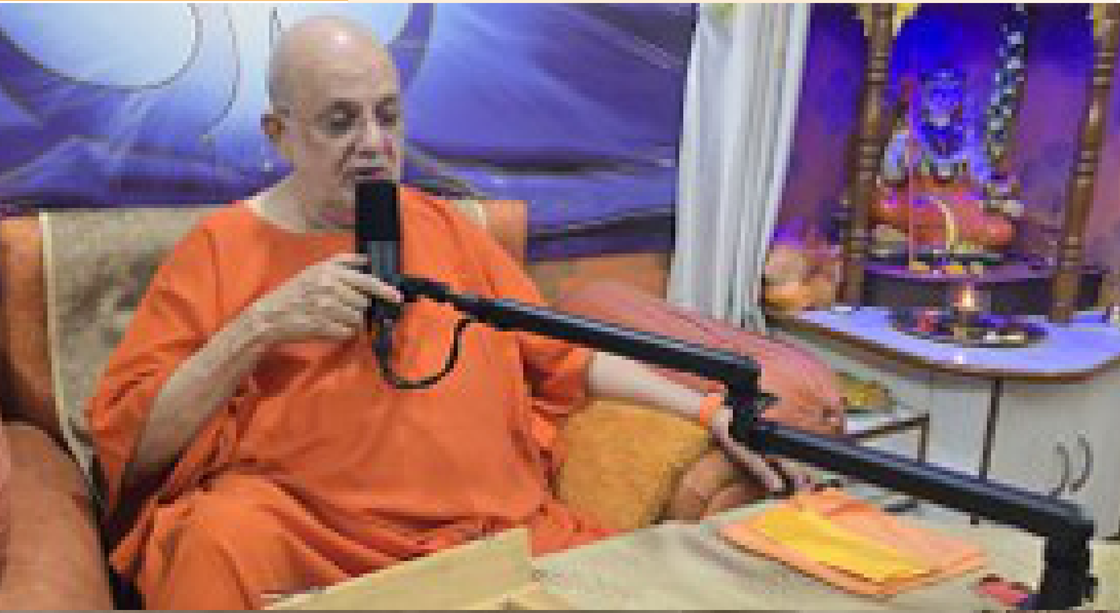

Activities

Birthday Blessings to Anash

up

Activities

Birthday Puja by Bharat

up

Om Sri Gurubhyo Namah

Programs

Poojya Guruji Swami Atmanandaji

conducts

Daily Classes on

Bhagwad Geeta

with Shanker Bhashya on

Chapter 5 (Karma Sanyas Yoga)

@ Vedanta Ashram, Indore

VEDANTA CAMP ON

GURU POORNIMA

by Poojya Guruji Swami Atmanandaji

From 26th to 28th July

On Pratah Smaran Stotram

@ Vedanta Ashram, Indore

Programs

VEDANTA CAMP

by P. Swamini Amitanandaji

From 12th to 16th July

On STHITAPRAGYA

Gita Ch. 2

Raman Adhyatmik Sewa Kendra,

Kheda Dist, Gujrat (In Gujrati)

VEDANTA CAMP

by Poojya Guruji & Ashram Mahatmas

From 30th Aug to 4th Sep

On Gita 8th Chapter

@ Vedanta Ashram, Indore

Click here for more details

Registration Form

Programs

Online Vedanta Class

On Upadesh Saar (Ramana Maharshi)

By P. Swamini Amitanandaji

Every Saturday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Online Gita Pravachans

Gita 6

By P. Swamini Samatanandaji

Every Sunday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☜ Click here)

GITA / UPANISHADS / PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Piyush - May '26 / **Vedanta Sandesh - June '26**

Visit us online :

Vedanta Mission

Check out earlier issues of :

Vedanta Piyush

Join us on Facebook :

Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel

Vedanta Ashram Channel

Published by:

Vedanta Ashram, Indore